पास बुक्स में नं. 1

संजीव®

पास बुक्स

व्यवसाय अध्ययन–XI

[कक्षा 11 वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों
के लिए नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार]

- नवीन पाठ्यक्रमानुसार लिखित
- सभी महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 300.00

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं। ध्यान रखें कि आप उक्त शर्तें मानते हुए ही यह पुस्तक खरीद रहे हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

भाग-1 : व्यवसाय के आधार

1. व्यवसाय, व्यापार और वाणिज्य 1-28
2. व्यावसायिक संगठन के स्वरूप 29-64
3. निजी, सार्वजनिक एवं भूमण्डलीय उपक्रम 65-86
4. व्यावसायिक सेवाएँ 87-114
5. व्यवसाय की उभरती पद्धतियाँ 115-136
6. व्यवसाय का सामाजिक उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक नैतिकता 137-153

भाग-2 : व्यावसायिक संगठन, वित्त एवं व्यापार

7. कम्पनी निर्माण 154-176
8. व्यावसायिक वित्त के स्रोत 177-201
9. लघु व्यवसाय एवं उद्यमिता 202-225
10. आन्तरिक व्यापार 226-253
11. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार 254-296

❑❑❑

व्यवसाय अध्ययन कक्षा-11

भाग 1 : व्यवसाय के आधार

1. व्यवसाय, व्यापार और वाणिज्य

(Business, Trade and Commerce)

पाठ-सार

व्यापार और वाणिज्य का इतिहास–प्राचीनकाल में भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार भूमिगत और सामुद्रिक अन्तर्देशीय व विदेशी व्यापार और वाणिज्य ही था। ईसा पूर्व तीसरी सहस्त्राब्दी में व्यापारिक केन्द्र भी आये, जिसके परिणामस्वरूप व्यापारियों और व्यापारिक समुदाय वाले भारतीय समाज का निर्माण हुआ। मुद्रा ने मापन की इकाई और विनिमय के माध्यम के रूप में काम किया, धात्विक मुद्रा की शुरुआत हुई और इसके उपयोग से आर्थिक गतिविधियों में तेजी आई। **स्वदेशी बैंकिंग प्रणाली** ने मुद्रा उधार एवं साखपत्रों के माध्यम से घरेलू और विदेशी व्यापार के वित्त पोषण में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। कृषि और पशुपालन प्राचीन लोगों के आर्थिक जीवन के महत्त्वपूर्ण घटक थे। उस समय सूती वस्त्रों की बुनाई, रंगाई, मिट्टी के बर्तन बनाना, कला और हस्तशिल्प, मूर्तिकला, कुटीर उद्योग, राजगीरी, यातायात-साधन आदि अतिरिक्त आय के साधन थे। प्रसिद्ध वर्कशाप (कारखाने) थे। व्यापार और वाणिज्य के वित्त पोषण हेतु वाणिज्यिक और औद्योगिक बैंक बने, कृषि बैंक भी अस्तित्व में आये। व्यापार के विकास में मध्यस्थों की प्रमुख भूमिका रही। उन्होंने विदेशी व्यापार का जोखिम वहन करने का उत्तरदायित्व लेकर निर्माताओं को वित्तीय सुरक्षा प्रदान की। **'जगत सेठ'** जैसी संस्था का भी विकास हुआ। मुगलकाल और ईस्ट इण्डिया के दिनों में उनका बहुत प्रभाव रहा। स्वदेशी बैंकिंग प्रणाली ने निर्माताओं, व्यापारियों और सौदागरों को विस्तार और विकास के लिए अधिक पूँजी कोषों से लाभान्वित किया। प्राचीन काल में जल और स्थल **परिवहन** लोकप्रिय थे। व्यापार जमीन और समुद्र दोनों ही माध्यमों से होता था। सामुद्रिक व्यापार, वैश्विक व्यापार नेटवर्क की एक अन्य महत्त्वपूर्ण शाखा थी। **कालीकट** तथा **पुलिकट** प्रमुख बन्दरगाह थे। देश के विभिन्न भागों में अलग-अलग समुदाय के लोग व्यवसाय में आये जिनमें पंजाबी और मुलतानी उत्तरी क्षेत्र में, भट्ट गुजरात व राजस्थान में, महाजन पश्चिमी भारत में, अहमदाबाद जैसे शहरी क्षेत्रों में 'नगर सेठ' तथा अन्य शहरी समूहों में व्यावसायिक वर्ग (हकीम, वैद्य, विधिवक्ता, पण्डित या मुल्ला, चित्रकार, संगीतकार) आदि मुख्य थे।

व्यापारिक समुदाय ने **गिल्ड** से अपनी प्रतिष्ठा और ताकत प्राप्त की जो अपने हितों की रक्षा के लिए स्वायत्त निगम थे। उद्योग और व्यापार पर कर, राजस्व के प्रमुख साधन थे। इनमें चुंगीकर, सीमा शुल्क कर, नौका कर आदि मुख्य थे। ये अलग-अलग दर से वसूल किये जाते थे। राजा या कर संग्रहकों से गिल्ड प्रमुख का सीधा व्यवहार हुआ करता था। गिल्ड व्यवसायी धार्मिक हितों के संरक्षक थे। इस प्रकार वाणिज्यिक गतिविधियों ने बड़े व्यापारियों को समाज में सत्ता हासिल करने में सक्षम बनाया।

पाटलीपुत्र, पेशावर, तक्षशिला, इन्द्रप्रस्थ, मथुरा, वाराणसी, मिथिला, उज्जैन, सूरत, कांची, मदुरै, भरूच, कावेरी पट्ट, ताम्रलिप्ति आदि **प्राचीन भारत में प्रमुख व्यापार केन्द्र** थे।

प्राचीनकाल में निर्यात में मसाले, गेहूं, चीनी, नील, अफीम, तिल का तेल, कपास, रेशम, तोते, जीवित मवेशी और पशु उत्पाद, कछुआ कवच, मोती, नीलमणि, चमकीले पत्थर, क्रिस्टल, लैपेस लाजुली, ग्रेनाइट, फिरोजा और तांबा आदि शामिल थे जबकि आयात में घोड़े, पशु उत्पाद, चीनी, सिल्क, फ्लेक्स और लेनिन, मणि, सोना-चाँदी, टिन, ताँबा, सीसा, माणिक, पुखराज, मूँगा, काँच और एम्बर शामिल थे।

1 ई. से 1191 ई. तक भारतीय उप-महाद्वीप की विश्व अर्थव्यवस्था में मुख्य स्थिति थी। मेगस्थनीज, फाह्यान, ह्वेनसांग, अलबरूनी, इब्नबतूता (11वीं शताब्दी), फ्रांसीसी फ्रेकोइस (17वीं शताब्दी) और अन्य लोग जो भारत आये उन्होंने भारत को अपने लेखन में स्वर्णभूमि और स्वर्णद्वीप कहा। पूर्व औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था को समृद्धि का स्वर्ण युग माना जाता है। इसी ने यूरोपियों को भारत की ओर यात्रा के लिए प्रेरित किया। 18वीं सदी का भारत प्रौद्योगिकी, नवाचार और विचारों में पश्चिमी यूरोप के पीछे था।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बढ़ते नियन्त्रण से भारत की आजादी में कमी आई। 18वीं शताब्दी के मध्य में भारत में ब्रिटिश शाही साम्राज्य का उत्थान हुआ। इसकी नीतियों के परिणामस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था की दशा बदल गई। भारत जो तैयार माल का निर्यातक था, वह कच्चे माल का निर्यातक और विनिर्मित माल का खरीददार बन गया।

आजादी के बाद अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई और भारत में केन्द्रीकृत नियोजन की शुरुआत हुई। योजनाओं में आधुनिक उद्योगों, आधुनिक प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक संस्थानों, अंतरिक्ष और परमाणु कार्यक्रमों की स्थापना को महत्त्व दिया गया। इन प्रयासों के बावजूद भी भारतीय अर्थव्यवस्था तीव्र गति से विकसित नहीं हो सकी। फलतः सन् 1991 में देश में आर्थिक उदारीकरण की नीति को अपनाया गया। फलतः भारतीय अर्थव्यवस्था आज दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। भारत सरकार की हाल की पहलों जैसे 'मेक इन इण्डिया', 'स्किल इण्डिया', 'डिजिटल इण्डिया' और नवनिर्मित निर्यात नीति आदि इसमें विशेष सहायक हो रही हैं।

व्यवसाय की प्रकृति और अवधारणा–सामान्य अर्थ में, व्यवसाय का अर्थ व्यस्त रहना है, जबकि विशेष सन्दर्भ में, व्यवसाय का अर्थ ऐसे किसी भी धन्धे से है, जिसमें लाभार्जन हेतु व्यक्ति विभिन्न प्रकार की क्रियाओं में नियमित रूप से संलग्न रहते हैं। वस्तुतः व्यवसाय से तात्पर्य उन आर्थिक क्रियाओं से है, जिनमें वस्तुओं का उत्पादन व विक्रय तथा सेवाओं को प्रदान करना सम्मिलित है। इन क्रियाओं का मुख्य उद्देश्य समाज में मनुष्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करके धन कमाना है।

व्यावसायिक क्रियाओं की विशेषताएँ–(1) व्यवसाय एक आर्थिक क्रिया है। (2) व्यवसाय वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन अथवा उनकी प्राप्ति करता है। (3) व्यवसाय में मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए वस्तुओं और सेवाओं का विक्रय या विनिमय किया जाता है। (4) व्यवसाय में नियमित रूप से वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय होता है। (5) उद्देश्य लाभ अर्जन करना। (6) व्यवसाय में प्रतिफल (लाभ) की अनिश्चितता रहती है। (7) व्यवसाय में जोखिम तत्त्व होता है।

व्यवसाय, पेशा तथा रोजगार में तुलना–व्यवसाय, पेशा तथा रोजगार में स्थापना की विधि, कार्य की प्रकृति, योग्यता, प्रतिफल, पूँजी निवेश, जोखिम, हित-हस्तान्तरण तथा आचार संहिता के आधार पर तुलना की जा सकती है।

व्यवसाय का अभिप्राय उन आर्थिक क्रियाओं से है, जिनका सम्बन्ध लाभ कमाने के उद्देश्य से वस्तुओं का उत्पादन या क्रय-विक्रय या सेवाओं की पूर्ति से है। **पेशे** में वे क्रियाएँ सम्मिलित हैं, जिनमें विशेष ज्ञान व दक्षता की आवश्यकता होती है और व्यक्ति इनका उपयोग अपने धन्धे में आय अर्जन हेतु करता है। **रोजगार** का आशय उन धन्धों से है, जिनमें लोग नियमित रूप से दूसरों के लिए कार्य करते हैं और बदले में पारिश्रमिक प्राप्त करते हैं।

व्यावसायिक क्रियाओं का वर्गीकरण–विभिन्न व्यावसायिक क्रियाओं को दो वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है—(1) उद्योग, (2) वाणिज्य।

(1) उद्योग–उद्योग से अभिप्राय उन आर्थिक क्रियाओं से है जिनका सम्बन्ध संसाधनों को उपयोगी वस्तुओं में परिवर्तन करना है।

उद्योगों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है—

(i) प्राथमिक उद्योग–इन उद्योगों में वे सभी क्रियाएँ सम्मिलित हैं जिनका सम्बन्ध प्राकृतिक संसाधनों के खनन एवं उत्पादन तथा पशु एवं वनस्पति के विकास से है। इसमें निष्कर्षण एवं जननिक उद्योग सम्मिलित हैं।

(ii) द्वितीयक या माध्यमिक उद्योग–इन उद्योगों में खनन उद्योगों द्वारा निष्कर्षित माल को कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है। इन उद्योगों द्वारा निर्मित माल या तो अन्तिम उपयोग के लिए काम में लिया जाता है या दूसरे उद्योगों में आगे की प्रक्रिया में उपयोग किया जाता है। माध्यमिक उद्योगों को विनिर्माण उद्योग जैसे विश्लेषणात्मक उद्योग, कृत्रिम उद्योग, प्रक्रियायी उद्योग, सम्मेलित उद्योग तथा निर्माण उद्योग में वर्गीकृत किया जा सकता है।

(iii) तृतीयक या सेवा उद्योग–इस प्रकार के उद्योग प्राथमिक तथा द्वितीयक उद्योगों को सहायक सेवाएँ उपलब्ध कराने में संलग्न होते हैं तथा व्यापारिक क्रिया-कलापों को सम्पन्न कराते हैं। व्यावसायिक क्रियाओं में, ये उद्योग वाणिज्य के सहायक अंग समझे जाते हैं।

(2) वाणिज्य–वाणिज्य में वे सभी क्रियाएँ सम्मिलित हैं जिनके द्वारा माल अथवा सेवा को सही व्यक्ति के पास, सही स्थान, सही समय, सही मूल्य पर, सही मात्रा तथा सही दशा में पहुँचाने का वैध कार्य पूरा किया जाता है। वाणिज्य में दो प्रकार की क्रियाएँ सम्मिलित हैं—**व्यापार** तथा **व्यापार की सहायक क्रियाएँ। व्यापार** का अर्थ वस्तुओं की बिक्री, हस्तान्तरण अथवा विनिमय से है। व्यापार आन्तरिक (देशीय) तथा बाह्य (विदेशी) हो सकता है। आन्तरिक व्यापार थोक व्यापार व फुटकर व्यापार में वर्गीकृत किया जा सकता है जबकि बाह्य (विदेशी) व्यापार आयात व्यापार, निर्यात व्यापार तथा पुनर्निर्यात व्यापार के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। **व्यापार की सहायक क्रियाएँ** वे क्रियाएँ होती हैं जो व्यापार को सहायता प्रदान करती हैं। इन सहायक क्रियाओं में परिवहन एवं संचार, बैंकिंग एवं वित्त, बीमा, भण्डारण, विज्ञापन आदि को सम्मिलित किया जा सकता है। इन क्रियाओं को सेवाएँ भी कहते हैं।

व्यवसाय के उद्देश्य–व्यवसाय का उद्देश्य लाभ अर्जित करना है जो लागत पर आगम का आधिक्य है। लेकिन व्यवसाय को लम्बे समय तक चलते रहने के लिए लाभ अग्रणी उद्देश्य होता है, लेकिन एकमात्र नहीं। वर्तमान में एक अच्छे व्यवसाय के लिए केवल लाभ पर बल देना तथा दूसरे उद्देश्यों को भुला देना, खतरनाक साबित हो सकता है। व्यवसाय के बहुमुखी उद्देश्य होते हैं जिनकी आवश्यकता प्रत्येक उस क्षेत्र में होती है जो निष्पादन परिणाम, व्यवसाय के जीवन एवं समृद्धि को प्रभावित करते हैं। व्यवसाय के बहुमुखी उद्देश्य निम्न क्षेत्रों में वांछनीय हैं—बाजार स्थिति, नवप्रवर्तन, उत्पादकता, भौतिक एवं वित्तीय संसाधन, लाभार्जन, प्रबन्ध निष्पादन एवं विकास, कर्मचारी निष्पादन एवं मनोवृत्ति तथा सामाजिक उत्तरदायित्व।

व्यावसायिक जोखिम–व्यावसायिक जोखिम से आशय अपर्याप्त लाभ या हानि होने की उस सम्भावना से है जो नियन्त्रण से बाहर अनिश्चितताओं या आकस्मिक घटनाओं के कारण होती है।

जोखिम दो प्रकार की हो सकती है—अनिश्चितता तथा शुद्ध। अनिश्चितता जोखिमों में लाभ तथा हानि दोनों की सम्भावना बनी रहती है, जबकि शुद्ध जोखिमों में हानि होगी अथवा हानि नहीं होगी।

व्यावसायिक जोखिमों की प्रकृति (विशेषताएँ)–(i) व्यावसायिक जोखिमें अनिश्चितताओं के कारण होती हैं; (ii) जोखिम प्रत्येक व्यवसाय का आवश्यक अंग होती है; (iii) जोखिम की मात्रा मुख्यत: व्यवसाय की प्रकृति एवं आकार पर निर्भर करती है; (iv) जोखिम उठाने का प्रतिफल लाभ होता है।

व्यावसायिक जोखिमों के कारण–व्यावसायिक जोखिमें अनेक कारणों से हो सकती हैं जैसे प्राकृतिक, मानवीय, आर्थिक एवं अन्य कारण।

व्यवसाय का आरम्भ–एक व्यवसायी को निम्नलिखित मूल घटकों को व्यवसाय प्रारम्भ करते समय ध्यान में रखना चाहिए—(i) व्यवसाय के स्वरूप का चयन; (ii) फर्म का आकार; (iii) स्वामित्व के स्वरूप का चुनाव; (iv) उद्यम का स्थान; (v) प्रस्थापन की वित्त व्यवस्था; (vi) भौतिक सुविधाएँ; (vii) संयन्त्र अभिन्यास; (viii) सक्षम एवं वचनबद्ध कामगार बल; (ix) कर सम्बन्धी योजना; तथा (x) उद्यम प्रवर्तन।

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. विभिन्न प्रकार की आर्थिक क्रियाएँ बतलाइये।

उत्तर–आर्थिक क्रियाओं के प्रकार—(i) व्यवसाय, (ii) धन्धा, (iii) रोजगार।

व्यवसाय–व्यवसाय में वस्तुओं का उत्पादन व विक्रय तथा सेवाओं को प्रदान करना सम्मिलित है। इन क्रियाओं का उद्देश्य समाज में मनुष्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए लाभ कमाना है।

धन्धा–धन्धे (पेशे) में वे क्रियाएँ सम्मिलित हैं, जिनमें विशेष ज्ञान व दक्षता की आवश्यकता होती है और व्यक्ति इनका प्रयोग अपने धन्धे में आय अर्जन हेतु करता है।

रोजगार–रोजगार का अभिप्राय उन धंधों से है जिनमें लोग नियमित रूप से दूसरों के लिए कार्य करते हैं और बदले में पारिश्रमिक प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 2. व्यवसाय को एक आर्थिक क्रिया क्यों समझा जाता है?

उत्तर–व्यवसाय एक आर्थिक क्रिया–व्यवसाय को एक आर्थिक क्रिया इसलिए समझा जाता है क्योंकि यह लाभ कमाने के उद्देश्य से या जीवन-यापन के लिए किया जाता है, न कि प्यार व स्नेह के कारण अथवा मोह, सहानुभूति या किसी अन्य भावुकता के कारण।

प्रश्न 3. व्यवसाय का अर्थ बताइए।

उत्तर–व्यवसाय का अर्थ–सामान्य अर्थ में, व्यवसाय का अर्थ व्यस्त रहना है। विशेष सन्दर्भ में, व्यवसाय का अर्थ ऐसे किसी भी धन्धे से है जिसमें लाभार्जन के लिए व्यक्ति विभिन्न प्रकार की क्रियाओं में नियमित रूप से संलग्न रहते हैं। ये क्रियाएँ अन्य लोगों की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि हेतु वस्तुओं के उत्पादन, क्रय-विक्रय या विनिमय और सेवाओं की आपूर्ति से सम्बन्धित हो सकती हैं। एक आर्थिक क्रिया के रूप में व्यवसाय में वस्तुओं का उत्पादन व विक्रय तथा सेवाओं को प्रदान करना सम्मिलित हैं। इन क्रियाओं का मुख्य उद्देश्य समाज में मनुष्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करके धन कमाना है।

प्रश्न 4. व्यावसायिक क्रिया-कलापों को आप कैसे वर्गीकृत करेंगे?

उत्तर– व्यावसायिक क्रिया-कलापों का वर्गीकरण

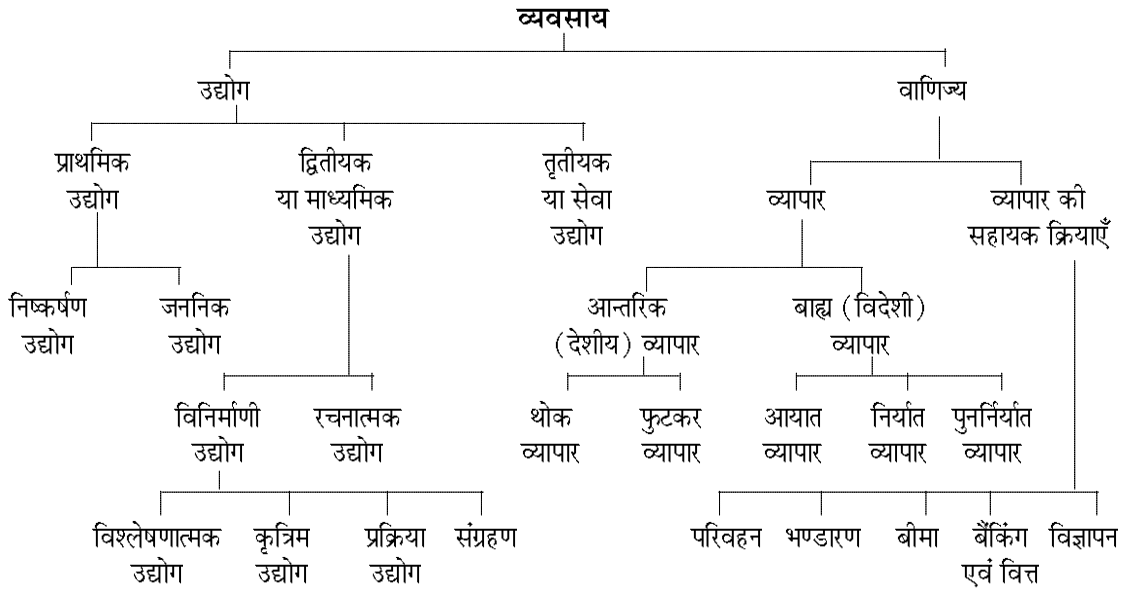

प्रश्न 5. उद्योगों के विभिन्न प्रकार क्या हैं?

उत्तर–उद्योगों के प्रकार–उद्योगों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है—

(1) प्राथमिक उद्योग–ये वे उद्योग हैं जिनका सम्बन्ध प्राकृतिक संसाधनों के खनन एवं उत्पादन तथा पशु एवं वनस्पति के विकास से है। इनमें निष्कर्षण उद्योग तथा जननिक उद्योग मुख्य रूप से सम्मिलित हैं।

(2) द्वितीयक या माध्यमिक उद्योग–इन उद्योगों में खनन उद्योगों द्वारा निष्कर्षित माल को कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है। इन उद्योगों द्वारा निर्मित माल अन्तिम उपभोग के लिए या दूसरे उद्योग की प्रक्रिया में काम आता है। इसमें विनिर्माण एवं निर्माण अर्थात् दोनों उद्योग ही सम्मिलित हैं।

(3) तृतीयक या सेवा उद्योग–ये वे उद्योग होते हैं जो प्राथमिक तथा द्वितीयक उद्योगों को सहायक सेवाएँ सुलभ कराने में संलग्न होते हैं तथा व्यापारिक क्रिया-कलापों को सम्पन्न कराते हैं।

प्रश्न 6. ऐसी कोई दो व्यावसायिक क्रियाओं को स्पष्ट कीजिये जो व्यापार की सहायक होती हैं।

उत्तर–व्यापार की सहायक क्रियाएँ

(1) बीमा–व्यवसाय में अनेक प्रकार की जोखिमें होती हैं। कारखाने की इमारत, मशीन, फर्नीचर आदि का आग, चोरी व अन्य जोखिमों से बचाव आवश्यक है। कर्मचारियों की भी दुर्घटना व व्यावसायिक जोखिमों से सुरक्षा आवश्यक है। बीमा इन सभी को सुरक्षा प्रदान करता है। इस प्रकार बीमा व्यापार की एक सहायक क्रिया है।

(2) भण्डारण–भण्डारण व्यावसायिक संस्थाओं को माल के संग्रहण सम्बन्धी कठिनाई को हल करने में सहायता प्रदान करता है। यह वस्तुओं को उस समय उपलब्ध कराता है जब उनकी आवश्यकता होती है। भण्डारण की सहायता से व्यवसाय की समय सम्बन्धी बाधा को दूर कर वस्तुओं की लगातार आपूर्ति द्वारा मूल्यों को उचित स्तर पर रखा जा सकता है।

प्रश्न 7. व्यवसाय में लाभ की क्या भूमिका होती है?

उत्तर–व्यवसाय में लाभ की भूमिका–व्यवसाय में लाभ की भूमिका इस रूप में होती है कि यह व्यवसायी के लिए आय का एक स्रोत होता है। यह व्यवसाय के विस्तार के लिए आवश्यक वित्त का स्रोत हो सकता है। लाभ व्यवसाय की कुशल कार्यशैली का द्योतक भी होता है। लाभ व्यवसाय का समाज के लिए उपयोगी होने की स्वीकारोक्ति भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त लाभ एक व्यावसायिक इकाई की प्रतिष्ठा एवं साख को भी बढ़ाता है।

प्रश्न 8. व्यावसायिक जोखिम क्या होता है? इसकी प्रकृति क्या है?

उत्तर–व्यावसायिक जोखिम–व्यावसायिक जोखिम से आशय अपर्याप्त लाभ या फिर हानि होने की उस सम्भावना से है जो नियन्त्रण से बाहर अनिश्चितताओं या आकस्मिक घटनाओं के कारण होती है।

प्रकृति–(i) व्यावसायिक जोखिमें अनिश्चितताओं के कारण होती हैं। (ii) जोखिम प्रत्येक व्यवसाय का आवश्यक अंग होती है। (iii) जोखिम की मात्रा मुख्यत: व्यवसाय की प्रकृति एवं आकार पर निर्भर करती है। (iv) व्यवसाय में जोखिम उठाने का प्रतिफल लाभ होता है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न–

प्रश्न 1. व्यवसाय को परिभाषित कीजिए। इसकी महत्त्वपूर्ण विशेषताओं की विवेचना कीजिए।

उत्तर–व्यवसाय का अर्थ एवं परिभाषा–व्यवसाय का अर्थ व्यस्त रहना है। विशेष सन्दर्भ में, व्यवसाय का अर्थ ऐसे किसी भी धन्धे से है, जिसमें लाभार्जन हेतु व्यक्ति विभिन्न प्रकार की क्रियाओं में नियमित रूप से संलग्न रहते हैं। वे क्रियाएँ अन्य लोगों की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि हेतु वस्तुओं के उत्पादन, क्रय-विक्रय या विनिमय और सेवाओं की आपूर्ति से सम्बन्धित हो सकती हैं। एक आर्थिक क्रिया के रूप में व्यवसाय में वस्तुओं का उत्पादन व विक्रय तथा सेवाओं को प्रदान करना सम्मिलित है। इन क्रियाओं का मुख्य उद्देश्य समाज में मनुष्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करके धन कमाना है।

व्यवसाय की विशेषताएँ–व्यवसाय की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. व्यवसाय एक आर्थिक क्रिया है–व्यवसाय एक आर्थिक क्रिया है क्योंकि यह लाभ कमाने के उद्देश्य से या जीविकोपार्जन के लिए किया जाता है। यह प्यार, स्नेह, सहानुभूति या किसी अन्य भावुकता के कारण नहीं किया जाता है।

2. वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन अथवा उनकी प्राप्ति–व्यवसाय वस्तुओं या सेवाओं को उपभोक्ताओं को उपभोग के लिए सुलभ करता है। इसके लिए वह या तो इनका स्वयं उत्पादन करता है या फिर इनको क्रय कर प्राप्त करता है। वस्तुएँ या तो उपभोक्ता वस्तुएँ (जैसे चीनी, पैन, नोटबुक) हो सकती हैं या पूँजीगत वस्तुएँ हो सकती हैं जैसे मशीन, फर्नीचर आदि। सेवाओं में बैंक, यातायात, भण्डारण आदि को शामिल किया जा सकता है।

3. वस्तुओं और सेवाओं का विक्रय या विनिमय–व्यवसाय की एक विशेषता यह है कि इसमें वस्तुओं और सेवाओं का क्रय-विक्रय या विनिमय होता है।

4. नियमित रूप से वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय–व्यवसाय की एक विशेषता यह है कि इसमें वस्तुओं और सेवाओं का जो लेन-देन होता है वह नियमित रूप से होता है। एक बार यदि वस्तुओं या सेवाओं का लेन-देन होता है तो उसे सामान्य रूप से व्यवसाय नहीं कहा जाता है। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति अपना घरेलू टीवी चाहे लाभ